श्री-हृदय

संकलयिता

श्री सोमानन्द

श्री सद्गुरुवन्दना

परब्रह्म और तूरीया के संगम को निरंजन कहते हैं,
वह मेरे हृदय में रहते हैं, अद्वैत निरूपण करते हैं,
जो श्री विद्या के सागर हैं औ गणपति विघ्न विभंजन हैं,
वे ही मेरे गुरुदेव हैं उनको ही निरंजन कहते हैं।

जो जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति में ॐकार बनकर रहते हैं,
नाथों में हैं वे दत्तनाथ, ऋषि में संवर्त्त विहरते हैं,
अवतारों में वे परशुराम विद्या बाला बन रमते हैं,
वे ही मेरे गुरुदेव हैं उनको ही निरंजन कहते हैं।

शिवसूत्र सुनाने में शिव हैं शक्ति सूत्र में हैं चित्शक्ति,
स्पन्दशास्त्र में वे उन्मेष, पाञ्चरात्र में चिरअनुरक्ति,
कामेश्वर में वह प्रकाश हैं संतों में भक्त विभूषण हैं,
वे ही मेरे गुरुदेव हैं उनको ही निरंजन कहते हैं।

शैवदर्शनों में परमशिव वे, बौद्धों में प्रज्ञापारमिता,
बने महामुनि जैनों के सिखों में नानक पूर्णास्मिता,
प्रेमाभक्ति गोपियों में हैं सब पाप ताप विनशावन हैं,
वे ही मेरे गुरुदेव हैं उनको ही निरंजन कहते हैं।

कच्छदेश में प्रकट हुए थे सारस्वत ब्राह्मण के कुल में,
वेदशास्त्र सब धर्म नियम उनके संग जैसे आये हों,
स्वयं त्रिविक्रम प्रभु ने उनको शिवोऽहं का ज्ञान दिया।
वे ही मेरे गुरुदेव हैं, उनको ही निरंजन कहते हैं।

मणिद्वीप विन्ध्याचल में तेरह वर्षों तक विचरण कर,
मिथिला अंचल के संतों में त्रिपुरसुन्दरी की विद्या भर,
उद्‌बोधित कर स्वस्वरूप को, तत्त्व निरूपण करते हैं,
वे ही मेरे गुरुदेव हैं, उनको ही निरंजन कहते हैं।

ज्ञान विराग क्षमा के सागर दक्षिणामूर्त्ति महामहिमामय,
ब्रह्मात्मबोध की सजग मूर्त्ति, शान्ति, मधुरिमा और विनय,
चित्स्वरूपता औ' स्वतंत्रता का हरदम संदेश सुनाते रहते हैं,
वे ही मेरे गुरुदेव हैं, उनको ही निरंजन कहते हैं।

स्वसंवित में विश्वानुभव कर स्वैर-बिहारी कहलाते हैं,
धर्म समन्वय, अति सहिष्णुता और तितिक्षा सिखलाते हैं,
सबको निजानन्द में पाकर स्वयं सर्वमय रह जाते हैं,
वे ही मेरे गुरुदेव हैं, उनको ही निरंजन कहते हैं।

जय जय हे गुरुदेव, पादुका देकर अपना बना लिया है,
जय जय हे गुरुदेव, देवता, मंत्र, हृदय में रमा दिया है,
जय जय हे गुरुदेव, परा और परम नसों में सजा दिया है,
जय जय हे गुरुदेव, देव सब शरण आपकी रहते हैं,
वे ही मेरे गुरुदेव हैं, उनको ही निरंजन कहते हैं।

प्रथम दर्शन

जनम-जनम तक जो अन्तर्यामी रहते हैं,
कर्मबन्धन कटने पर गुरु रूप में मिलते हैं,
ज्ञानेन्धन से कर्मेन्धन को जला विभूति बनाते हैं,
अन्तःकरणों के प्रेरक वे गुप्त रूप से बसते हैं।

करने को प्रबोध भक्त को स्वयं सामने आते हैं,
निःसंशय है मन उनका, निर्द्वन्द्व सभी गतिविधियाँ हैं,
सदा अकारण करुणासागर सुलख निरजंन कहते हैं,
षट्चक्रों में घूम-घूमकर धाम सहसदल आते हैं।

चित्शक्ति को आत्मसात् कर सब अद्वैत् बताते हैं,
श्रुतिपथ के प्रतिपादक हैं, गुणातीत अभयाचारी,
चन्द्रलोक से अमिय पिलावें परम्परा के अधिकारी।

मंगलाचरण

जय सीता की जन्म भूमि हे,
जय प्रभु राम विहार कुञ्ज हे,
जय मधुवन-वनगाँव ग्राम के,
मधुमय वासी संत-सदन हे।

१. जय सब ऋषिगण, जय साधक-गण,
जय गुरुदेव निरंजन प्रभु हे,
जय श्री माता त्रिपुर-सुन्दरी,
जय विद्या संग श्री मधुमति हे।

२. मध्य युगीन वृन्दावन नगरी में,
महाप्रभु बल्लभ आचार्य जी रहते हैं,
सूरदास जिनके चरणरज प्रवाह से,
महाकवि बनकर जग में विहरते हैं।

३. उन्हीं की कृपा पा मीरा माँ मत्त है,
कृष्ण को रिझाया है, मधुर पद गाया है,
भारत की भूमि में मीरा के भजन ने,
जन-गण को मुग्ध कर लक्ष्य दिखलाया है।

४. उसी भाँति श्री विद्या की मूर्त्ति बन,
अभिनव मीरा पधारी हैं मिथिला में,
गौण व्यक्तित्व है, गुप्तावतार हैं,
उर्ध्वाम्नाय की विद्या को पूजती हैं।

५. इसी तरह मधुमती विद्या भी रूपधर,
सेवती हैं अपने सद्गुरु राज को,
आगे श्री चक्र धर पूजती हैं भक्ति से,
वामकेश्वर तन्त्र के बताये हुए क्रम से।

श्री-हृदय

दो नेत्र वाले गुरुदेव करुणा सागर हैं,
हाथ में वर-अभय, महाराज शिवरूप हैं,
रूप ॐकार है शुद्ध स्फटिक जैसा,
नित्य सदा-शिवमय हैं श्री गुरु प्रणाम है।

जगद्धात्री श्री विद्या सर्ग-स्थिति लयेश्वरी हैं,
विन्दु त्रिकोण युक्त हैं, अष्ट कोण समन्विता हैं,
दो दश कोण हैं, अस्त्र मंत्र पूर्ण हैं,
अष्टदल बने हैं, षोडशदल भरे हैं।

शुभ्र तीन वृत्त हैं, सदनत्रय भूषित हैं,
प्रणाम ललिता चक्र को, भक्त इष्ट दायिनी को,
वहाँ अमृतसागर हैं, रत्न द्वीप को प्रणाम है,
नाना वृक्ष महोद्यान हैं, कल्पवाटिका को वंदन है।

मंदारवाटिका को प्रणाम एवं पारिजातवाटिका को वंदन
कदम्बवाटिका को प्रणाम, कर हे देवेशि ! तुम्हें प्रणाम है।
पुष्पराग महारत्न प्राकार को प्रणाम है,
पद्मराग नाम है, विविध मणिगण का भजन है,

गोमेद रत्न प्राकार और वज्रप्राकार के शरणागत हूँ,
हे ईश्वरी तेरे वैदूर्य रत्न प्राकार को प्रणाम है।
इन्द्रनील के मणियों के प्राकार को प्रणाम है,
मुक्ता रत्नमय प्राकार को सदा भजा करता हूँ,

मरकत महारत्न प्राकार को नमस्कार है,
विद्रुम के महारत्न प्राकार के आश्रित हूँ।
माणिक्य मण्डप को वंदन है सहस्रस्तंभ मंडित हैं,
हे देवि ललिते ! आपके अमृत वापी को प्रणाम है,

आनंदवापिका को वंदन है, विमर्श को प्रणाम है,
भजता हूँ बाला तपोद्गार को,
शरण में हूँ चन्द्रिकोद्गार के।

महाश्रृंगार परिखा, महापद्माटवी का भजन है,
चिन्तामणि महारत्न गृहराज को नमस्कार है,
पूर्वाम्नायमय पूर्वद्वार को भजा करता हूँ,
दक्षिणाम्नाय रूपवाले दक्षिणद्वार की शरण में हूँ।

नमस्कार परंद्वार को जो पश्चिमाम्नायरूप है,

वन्दन है उत्तर द्वार को जो उत्तरद्वार रूप हैं,
पुनः वन्दन उर्ध्व द्वार को जो उर्ध्वद्वार रूप है,
हे कुलेश्वरि! ललिते! आपके
महासिंहासन का भजन करता हूँ।

पंचपादों में एक ब्रह्मात्म को नमस्कार है,
मञ्चपादों में एक विष्णुमय को नमस्कार है,
एक रुद्रमय मञ्चपाद को नमस्कार है,
हे देवी, ईश्वरात्मक एक पाद को नमस्कार है।

शुभ मञ्चफलक सदाशिवमय को वंदन है,
हंसतूल-तल्पक को नमस्कार है,
उत्तम हंसतूल महोपाधान का भजन है,
आपके कौस्तुभास्तरणं को नित्य नमस्कार है।

वन्दन महावितान का, भजन महायवनिका का,
इस तरह शिवप्रिय श्री चक्र के पूजा-गृह का ध्यान हुआ
उसके दायें रख रहा हूँ गंध अक्षत पुष्पराशि को,
हे महादेवि उसके आगे दिखाता हूँ दीप को।

मूल मंत्र से हे त्रिपुरे, पूजन अब करता हूँ,
आपके तीन खण्ड हैं शिवप्रिये, तीनों को पूजता हूँ,
वायु अग्नि जल संयुक्त है प्राणायाम करता हूँ,
शोषण, दाहन, प्लावन प्रेमभक्ति पूर्वक करता हूँ।

तीन बार मूलमंत्र से करता प्राणायाम हूँ,
'अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिता',
जो भूत विघ्नकर्त्ता हैं शिवाज्ञा से तुरंत भाग जाँय,
इस मंत्र से तीन बार ताली बजाता हूँ।

नारायण मैं, ब्रह्मा मैं, भैरव मैं, मैं ही शिव हूँ
देव मैं हूँ, मैं परमात्मा हे महात्रिपुर सुन्दरी,
वज्रकवच का ध्यान कर न्यास करता हूँ मैं,
महात्रिपुर सुन्दरी कुमारी के तीनों बीजों को भजता हूँ,

मेरी रक्षा करें, रक्षा करें हे ईश्वरी, हृदय पर अञ्जलि देता हूँ।
देवी का आसन लगाता हूँ उस आसन को नमस्कार है,
चक्र का आसन रखता हूँ सभी मंत्रों को भजता हूँ,
वंदन है साध्य सिद्धासन को, सभी मंत्रों को जपता हूँ,

देवताओं को उत्तम आसन देकर चक्र मंत्र को जपता हूँ,
फिर षडंगपूर्ण करता हूँ सभी मातृकाओं को पूजता हूँ,
वशिनी आदि आठों का न्यास करता हूँ फिर,
षोढ़ान्यास तथा महाषोढ़ान्यास करता हूँ

नवयोनि की पूजा ही नवावरण पूजा बनती है।
फिर चक्रन्यास करने पर उत्तम श्रीकंठन्यास करता हूँ,
केशवादियों का महान्यास, कामन्यास, करता हूँ
कलान्यास कर चुकने पर कामकला न्यास करता हूँ।

पीठन्यास पूर्ण करने पर तत्त्वन्यास करता हूँ
फिर तिथि नित्याओं का न्यास करता हूँ हे त्रिपुरेश्वरी!
फिर शुद्धोदक को लेकर वामभाग में रखता हूँ,
मंडलवृत्त बनाता हूँ, शिवप्रिय चतुरस्र सजाता हूँ,
फूलों से फिर पूजनकर साधार शंख रख लेता हूँ,

षडंगों की पूजा कर उसमें जल भर देता हूँ
आदि विन्दु को देकर माला अभिमन्त्रित करता हूँ
उसके जल से जगन्माता त्रिकोण वृत्त युत करता हूँ
षट्कोण और चतुरस्र का मंडल पूरा सजाता हूँ

विद्या से पूजन कर फिर त्रिखण्ड पूजन करता हूँ
बीजों से षट्कोणों का हे शिवप्रिय पूजन करता हूँ
उसमें दशकलापूर्ण अग्निमण्डल के आश्रित होता हूँ
धूम्रार्चिष को नमस्कार हृष्या ज्वालिनी को भजता हूँ

ज्वालिनी को नमस्कार कर, विस्फुल्लिंगिनी को वंदन कर;
सुश्रियपंचस्वरूपा को कपिला को प्रणाम करता हूँ।
नमस्कार नितहव्यवहा को काव्यवहा का भजन करूँ
भजन करूँ दशकला अग्नि का पादिभिः कहलाये जो

वही द्वादश सूर्यमंडल को पूजूँ अर्घ्यपात्र लेकर
सदा भजूँ मैं तपनी और तापिनी को मन से
धूम्रार्चि, मरीचि को वंदन ज्वालिनी रुचि को भजा करूँ
वंदन सुषुम्ना, भोगदा को विश्वा और बोधिनी को।

धारिणी और क्षमा को भज लूँ फिर सोममण्डल में
षोडश कला को भजकर अमृत पाऊँ
अर्घ्यामृत को वंदनकर अमृतानंद द्वय को पूजूँ
पूषा, तुष्टि, पुष्टि, रति, धृति का पूजन भजन करूँ

वंदन कर शशिनी चन्द्रिका को कान्ति ज्योत्सना को भज लूँ
श्रिय, प्रीति, अंगदा, पूर्णा, पूर्णामृता का भजन करूँ
षोडश स्वरयुक्त सोम कला को भज
लिख डालूँ त्रिकोण अकथ,
हलक्ष वर्ण में मिलकर स्थित हूँ हँस भास्वर
वाक्वामशक्ति में मिले हँस में मिल आराधन करता हूँ।

वृत्त के बाहर षडस्त्र का लेखन मैं करता हूँ
पुरोभाग के षटकोण का षड्गार्चन किया करूँ
श्री विद्या को सप्तवार मैं अभिमंत्रित किया करूँ
हे विश्वेशी उनको ही गंधाक्षत अर्पित करता हूँ

सभी विद्यामय पूजा द्रव्यों का ध्यान तभी करता हूँ
संख्य मंत्र को चार नमन कर स्पृष्ट जप मैं करता हूँ
वह्नि दश कला और द्वादश सूर्यकला को भजता हूँ
आश्रित हूँ षोडशकला के वहीं सोम की कामदा

सृष्टि, वृद्धि, स्मृति मेधा कान्ति को वन्दन है
लक्ष्मी, द्युति, स्थिरां को वंदन स्थिति सिद्धि को भजता हूँ

यही ब्रह्म कला है जहाँ पालिनी को भजता हूँ
शान्ति, ईश्वरी रति कामिका का वन्दन करता हूँ

वरदाह्लादिनी को वंदन प्रीतिदीर्घा को भजता हूँ
विन्दु संग श्री विष्णु की दशकला को भजता हूँ
वंदन विष्णु कला को तीक्ष्णारौद्रीमयी माँ
वंदन निद्रा, तन्द्रा, क्षुधा, नमन है हे क्रोधिनी क्रिया

भज लूँ उद्गारी को, मृत्यु को—ये हैं रुद्र कला
भजन करूँ पीता, श्वेता का औ' अरुणा देवी का
पादिभि सहिता फिर भज लूँ श्मामा को ईश्वर
की कला को वंदन कर जो नित्याभीष्टदा है

निवृत्ति प्रतिष्ठा विद्या शान्ति को नमस्कार है
इन्धिका दीपिका रेचिका मोचिका को है सदा नमन
परासूक्ष्मा को है नमन सूक्ष्मामृत कला को नमस्कार
ज्ञान रूपा को नमन कर ज्ञानामृता कला को पुनः नमन

आप्यायिनी व्यापिनी और व्योमरूपा को नमस्कार है
सदाशिव की इन षोडशकला को सदा प्रणाम है

हंस मंत्र को सदा नमन कर ज्योतिर्मय हंस काश्रय लेता हूँ
प्रथम वृत्त है औ' मंत्र–ज्योति का आश्रय लेता हूँ

त्र्यम्बक को नमस्कार कर विष्णु मंत्र जप करता हूँ
मूलविद्या विष्णुयोनिमय उत्तम मंत्रविराजित हैं
अमृत मंत्र को नमस्कार कर चार बार जप करता हूँ
अखंडैक रसानन्द है कर में परसुधा जल है

हे कुलरूपिणी स्वच्छन्द मंत्र की दे स्फुरणा
उसी रूप में रखकर तेरे कर मध्य में हे स्वरूपिणी
अमृत पालें, इसमें हे वस्तुक्लिन्न स्वरूपिणी
परमामृतामयि बनकर चित्स्फुरणा करती रहना

हे अमृतेशी, अमृतबर्षिणि नमस्कार लेती रहना
नमन वाग्वादिनी माँ को औ' प्रणाम श्री विद्या माँ को
इस परमामृत को मंत्रों से पूरित कर अर्पण करता हूँ
इसको ज्योतिर्मय कर दो माँ परमअर्घ्य है हे परमेश्वरी

उसी विन्दु ले शिर में त्रिगुरुओं की पूजा करता हूँ
वही-वही ब्रह्मात्मास्मि है, कुण्डलिनी में पाता हूँ

हृतचक्रस्था महादेवी महात्रिपुरसुन्दरी ही है।
मोहतिमिर को हरने वाली वही विश्वरूपिणी बनी

नासापुर में पर कला मन्द वहिर्गत करता हूँ
मध्यस्था को सममय करके फूल चढ़ाता त्रिखण्डा में
हे जगन्माते, महादेवी, महात्रिपुर सुन्दरी
हे शिवे, शुद्ध चैतन्य मूर्त्ति की कर रहा हूँ कल्पना

इन्हीं मंत्रों से हे माता यन्त्र में तुम्हें बिठाता हूँ
महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्द विग्रहे
सर्वभूतहिते मातर्एहिएहि परमेश्वरी
देवेशि भक्त सुलभे सर्वावरण संयुते

जबतक पूजा करूँ तुम्हारी तबतक तू स्थिर रहना
इन दोनों मंत्रों से माँ आवाहन तेरा करता हूँ
फिर पाद्य और अर्घ्य से नमस्कार कर लेता हूँ।

सुगंध तैल अंगों में लेकर मज्जनशाला में है प्रवेश
वहाँ मणिपीठ पर उपवेशन की कल्पना करता हूँ
उस गृह में आपको स्नान करना है गृह कपाट बन्दकर
फिर आपको गर्म जल से स्नान करने की कल्पना करता हूँ

हेमकुम्भ से गिरते जल से चलता तब अभिषेक है
फिर साफ वस्त्र से परिमार्जन करने की
कल्पना है हे माँ! सादर नमस्कार है।

बालभानु जैसे रंग का यह दुकूल परिधान है
अरुण दुकूल और उत्तरीय की कल्पना कर लेता हूँ।
फिर लेपनमण्डप में आपके प्रवेश की कल्पना करता हूँ
यहाँ मणिपीठ पर आपको बैठते देख नमस्कार है।
अष्टगंध से सभी अंगों में विलेपन करती हैं आप
केशों में कालागुरु महाधूप की शोभा है।

आपकी मालायें हैं मल्लिका मालती जुही और चम्पक की
कल्पनाओं की मालायें हैं, सविनय नमस्कार है
पुनः नमन कर भूषणमण्डप में प्रवेश की कल्पना है
वहाँ रत्नपीठ पर आप बैठती हैं, प्रणाम है
चन्द्रशकलमय नवमाणिक्य मुकुट धारण करती हैं
फिर माँग में सिन्दूर तथा उत्तम तिलक लगाती हैं।

कालाञ्जन-मज्जित हो दोनों पाली धारण करती हैं
मणिकुण्डल दोनों कानों के आभरण हैं हे ईश्वरी,

नासाभरण मुक्तामाणिक्यमय हे उत्तम हे त्रिपुरे,
ललिते ये सब जैसे स्वयंधारण की कल्पना है।

ग्रीवा के भूषण सोने के चित्तक कितने उत्तम हैं
पदकों एवं महापदकों की कल्पना मनोहारिणी है
मुक्तावली और एकावली की कल्पना आती है
छन्नबीज और केयूर दो और चार क्रम में हैं
ईशानी वलयावली औ' उर्मिकावली हे ईश्वरि

काँची दाम मनोहर हैं सौभाग्य सूत्र आभरण है
त्रिपूरे पाद कटक और रत्ननुपुर की कल्पना है
बिछिया दें पैरों में एक हाथ में पाशधरे
एक हाथ में अंकुश और पुण्ड्रेक्षु धनुष दूसरे में

अन्य हाथ में पुष्पवाण हे त्रिपुर सुन्दरी
इन्हीं आवरणों से युक्त हो महाचक्र अधिरोहण करती
फिर कामेश्वर अंकपर्यंक में उपवेशन करती
सुधासव पूर्ण चषक ले माँ करती आचमन हो
फिर पान कपूर वीटिका की कल्पना हे शिवे।

आनन्दोल्लास वैलासहासमय सदा कल्पना करता हूँ
मंगल आरती देने की मैं पुनः कल्पना करता हूँ
फिर दोनों तरफ चंवर डुला दर्पण सम्मुख करता हूँ
ताल वृन्त से हवा दिखाकर गंध पुष्प दूँ हे ईश्वरि

धूप दीप नैवेद्य कल्पित कर नमस्कार कर लेता हूँ
सर्वानन्दमय विन्दु चक्र में पूजन वन्दन करता हूँ
रम्यरत्नसिंहासन पर समासीना हैं शिवप्रिया
हजारों बालसूर्य तथा जपापुष्प सम आभा छिटक रही है

मुकुट विराजित हैं नव रत्नों की प्रभा जैसा
अष्टमीचन्द्र की रेखा लगी है, भाल पर तिलक है
अतुलनीय सौन्दर्य है धनुष जैसी दोनों भ्रू लताएँ हैं
नेत्रों में अञ्जन सुन्दर है कमल नयन से निहारती हैं।

दोनों कानों में विराजित हैं मणिमय कुण्डल
नासाभरण तो मुक्ता माणिक्य से निर्मित हैं
गुलाबीमदमय दोनों कपोल खिल रहे हैं
पके हुए बिम्ब से दोनों अधर लाल हैं

दाँतों की शोभा शुद्ध मुक्तावली जैसी लगती है
मुँह भरा है पान से, मन्द मुस्कान की आभा है
आर्यभूषण पहने हैं, हेमचित्रांक लगे हैं
पदक और महापदक गले के नीचे लटके हैं

चारों बाहुओं में केयूरांगद बाजूबन्द हैं
अष्टगंध से मिले हुए श्री चन्दन विलेपित हैं
दोनों स्तन मानो हेमकुम्भमय हैं
लाल वस्त्र परिधान हैं लाल कंचुक लगे हैं

हल्की सूक्ष्म रोमावलियाँ तनुमध्ये विराजिता हैं
पीत वस्त्र परिधान है पीत कंचुक युक्त हैं
मुक्तामाणिक्यमय करधनियाँ शोभ रही है
सदाशिव की गोद में है, महा पृथुल मंडल है
दोनों जंघायें कदलीस्तम्भ जैसे हैं, गुल्फ तो ढके हैं
दोनों चरण लाल हैं सर्वदा प्रणाम है

ब्रह्मा, विष्णु महादेवों के सिरों के मुकुट माँ के चरणों पर हैं
काम इत्यादि पूजते हैं चरणों की जो भक्तत्राण परायण हैं
ईखधनुष पुष्प, वाण, पाश, अंकुश परा ने धर रखा है
संवितस्वरूपिणी देवी परमेश्वरी का ध्यान करता हूँ

वरप्रदा जो नवमुद्रायें हैं उन्हें मैं दिखाता हूँ
तीन बार हे त्रिपुरे तर्पण मूलमंत्र से करता हूँ
अग्निकोण, निऋति, मारुत, ईशान मध्य,
दिक्षु आदि षड्ंगों की क्रमशः पूजा करता हूँ।

आद्या कामेश्वरी को नमस्कार कर भगमालिनी को प्रणाम
नित्यक्लिन्ना को नमस्कार कर भेरुण्डा को प्रणाम करता हूँ
वह्निवासाँ नमस्कार है महावज्रेश्वरी को स्तवन
शिवदूती को नमस्कार है त्वरिता और कुलसुन्दरी को

नित्या, नीलपताका को, विजया सर्वमंगला को
ज्वालामाला चित्रा महानित्या को स्तवन है
दिव्यौघ को नमस्कार है परेशं को परमेश्वरी
मित्रेश, षष्ठीश उड्डीशनाथ को प्रणाम है

चर्यानाथ को नमस्कार, लोपामुद्रा को भजता हूँ
अगस्त्य को कर प्रणाम सिद्धौघ और कालतापन को
धर्माचार्य को नमस्कार कर मुक्त केशीश्वर को भजता हूँ

दीपकला नाथ को भजता फिर मानवौघ गुरुओं को
विष्णुदेव को नमस्कार है मनोज देव का कर स्तवन

कल्याणदेव और रत्नदेव को सादर भजता रहता हूँ
वासुदेव को नमस्कार कर श्री समानन्द के आश्रित हूँ

परमेष्ठि गुरु को वन्दन कर, परमगुरु के आश्रित हूँ
श्रीगुरु को कर प्रणाम सिर पर अखिल ब्रह्म भरपूर
कविलहें नमस्कार कर जहाँ श्री गुरुपादुका पड़ी
पहले पटल चतुरस्र को कर प्रणाम हे ईश्वरि

अणिमा लघिमा को वंदन करूँ, महिमा को प्रणाम है
इशित्वसिद्धि को वन्दन और वशित्व सिद्धि को नमस्कार है
प्राकाम्यसिद्धि को वन्दनकर भुक्ति इच्छा प्राप्ति एवं सर्वकाम को भजता हूँ

मध्यम चतुरस्र में ब्राह्मी एवं माहेश्वरी को भजता हूँ
कौमारी, वैष्णवी को वन्दन कर वाराही,
माहेन्द्री, चामुण्डा औ' महालक्ष्मी को भजता हूँ
तृतीय चतुरस्र में सर्व संक्षोभिणी को भजता हूँ

सर्वविद्राविणि मुद्रा और सर्वाकर्षिणिकां को भजता हूँ
मुद्रा वशंकरी को वन्दन सर्वोन्मादिनिकां का भजन करूँ
महांकुशा मुद्रा को भजता, खेचरी को प्रणाम करता हूँ
वीजमुद्रा, योनिमुद्रा को भजकर सर्व त्रिखंडिनी को भजता हूँ

त्रैलोक्यमोहन चक्र को नमस्कार है हे ललिते सदा
प्रकटादि योगिनियों को नमस्कार है जो इष्टफल देती हैं
वहीं सुधार्णवासन को वन्दन है जहाँ परमेश्वरी हैं
चक्रेश्वरी को वहाँ वन्दन है हे त्रिपुरा परमेश्वरी

सर्वसंक्षोभिणी मुद्रा की वहाँ कल्पना करता हूँ
षोडशदल में कामाकर्षिणिकां को भजता हूँ
बुद्धयाकर्षिणिकां को वंदन है, अहंकाराकर्षिणिकां को भजता हूँ
शब्दाकर्षिणिकां को वन्दन है, स्पर्शाकर्षिणिकां को भजता हूँ

रूपाकर्षिणिकां को वन्दन है, रसाकर्षिणिकां को भजता हूँ
गंधाकर्षिणिकां को वन्दन है, चित्ताकर्षिणिकां को भजता हूँ
धैर्याकर्षिणी को कर प्रणाम स्मृत्याकर्षिणी को भजता हूँ
नामाकर्षिणिकां को वन्दन है, वीजाकर्षिणिकां को भजता हूँ

आत्माकर्षिणिकां को वन्दन है, अमृताकर्षिणिकां को भजता हूँ
शरीराकर्षिणिकां को वन्दन है, नित्या श्री परमेश्वरी हैं
गुह्या योगिनी को वन्दन है वहाँ मैं गुप्तपूजिता हूँ
हे ईश्वरी, सर्वाशापूरक चक्र की कल्पना करता हूँ

पीत कमल का आसन है हे ललिता माता
त्रिपुरेशि महादेवि को भजता हूँ इष्ट सिद्धिदा को
चिंतन करता हूँ सर्वविद्राविणी मुद्रा की वहाँ
शिवे, तेरे अष्टपत्र में मैं भजता अनंग कुसुमा को

अनंग मेखला तथा अनंग मदना को भजता हूँ
फिर प्रणाम करता हूँ अनंगमदनातुरा को
अनंगरेखा और अनंगवेगिनी का वन्दन करता हूँ

अनंगांकुशा को तथा अनंगमालिनी को भजता हूँ
फिर सर्वसंक्षोभिणी चक्र का भजन करता हूँ
गुप्ततराख्या योगिनी सर्वकामदा को वन्दन है
वहाँ मैं प्रणाम करता हूँ देवी के उत्तम आसन को

हे शिवे भुवनों में सर्वसंक्षोभिणी को भजता हूँ
सर्व विद्राविणी को वंदन है सकलाकर्षिणी का भजन है
सकलाह्लादिनी को वन्दन है सर्वसंमोहिनी का भजन है
सर्व स्तम्भिणी को वंदन है सर्वजृम्भिणी का भजन है

वशंकरी को नमस्कार है सर्व रंजनिका का भजन है
सकलोन्मादिनी को वन्दन है सर्वार्थसाधिनी का भजन है

सम्पर्त्तिपूरणी को वन्दन है सर्वमंत्रमयी का भजन है
भजता हूँ वहाँ सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करी की
यहाँ कल्पना करता हूँ सर्व सौभाग्यदायिनी चक्र की

जगद्धात्री को नमस्कार है सम्प्रदाय योगिनी को प्रणाम है
शिवे आपके उत्तम श्री चक्रासन को नमस्कार है
जगदीशानि को नमस्कार है महात्रिपुर वासिनी हैं

हे माँ शिवा आपकी सर्वमुद्रावशंकरी को प्रणाम है
वहिर्दशार में हे देवि सर्वसिद्धिप्रदा को भजता हूँ
सर्वसम्पत्प्रदा को वन्दन है, भजन सर्व प्रियंकरी का
सर्व मंगल कारिणी को सदा नमन करता हूँ

सर्वकामप्रदा को वन्दन है सर्व-दुःख-विमोचनी का
सर्वमृत्युप्रशमनी और सर्वविघ्ननिवारणी का
सर्वांग सुन्दरी है देवी सर्व सौभाग्यदायिनी
सर्वार्थसाधक चक्र है वहाँ जिनकी कल्पना करता हूँ

फिर कल्पना करता हूँ कुलोत्तीर्ण योगिनी की
सर्वमंत्रों का आसन है त्रिपुरा श्री के आश्रित हूँ

फिर सर्वोन्मादन मुद्रा की कल्पना करता हूँ
अन्तर्दशार में हे देवी सर्वज्ञा को प्रणाम हैं

सर्वशक्ति को नमस्कार है सर्वैश्वर्यप्रदा को भजता हूँ
सर्वज्ञानमय को वन्दन है सर्वव्याधिविनाशिनी हैं
सर्वाधार स्वरूपा और सर्वपापहरा को भजता हूँ
सर्वानन्दमयी को वन्दन है सर्वरक्षास्वरूपिणी हैं

सर्वेच्छित फलप्रदा को प्रणाम करता हूँ
सर्वरक्षा कर चक्र की वहाँ कल्पना करता हूँ
वही निगर्भब्रह्म योगिनी का वंदन करता हूँ परमेश्वरी
साध्यसिद्धासन को वंदन है, त्रिपुरमालिनी का भजन है

वहाँ हे देवी कल्पना करता हूँ सर्वमहांकुशामुद्रा की
अष्टार में वशिनी को वंदन है महाकामेश्वरी का भजन है
मोदिनी विमला का वन्दन है अरुणाजयिनी का भजन है
सर्वेश्वरी को नमस्कार है; प्रणाम है कौलिनी को

वहीं रहस्ययोगिनी की कल्पना करता हूँ
सर्वरोगहर चक्र का विशेष चिन्तन है वहाँ
नमस्कार है त्रिपुरा सिद्धा को खेचरीमुद्रा को भजता हूँ

जृंभण वाण को नमस्कार है संमोहनचाप को भजता हूँ
हाथ में पाश का भजन कर स्तम्भन अंकुश को भजता हूँ

त्रिकोण में जगद्धात्री महाकामेश्वरी को भजता हूँ
महावज्रेश्वरी एवं महाभगमालिनी को वन्दन है
सर्वकामफलप्रदा महाश्री सुन्दरी का वन्दन है
सर्वसिद्धिप्रद चक्र को तेरे, देवि, नमस्कार है

अतिरहस्या योगिनी जो कामदा है, नमस्कार करता हूँ
त्रिपुराम्बा को नमस्कार है, बीजमुद्रा को नमस्कार है
मूलमंत्र से ललिते तुझे विन्दु में पूजता हूँ
तेरे सर्वानन्दमय चक्र को प्रणाम करता हूँ

परापर रहस्या योगिनी की कल्पना करता हूँ
महाचक्रेश्वरी को वन्दन है योनिमुद्रा को भजता हूँ
धूपदीपादि सर्व अर्पण की सदा कल्पना करता हूँ
तेरे प्रिय महामुद्रा दिखाता हूँ तुझे हे शिवे

त्रिधात्मा मूलमंत्र से हे शिवे, तर्पण करता हूँ
शाल्यन्नं मधुसंयुक्त सर्वभक्ष मिले हुए हैं
साक्षात क्षीर और अनेक शाक अर्पण करता हूँ
सोने के पात्र में नैवेद्य की कल्पना करता हूँ

संकल्पविन्दु से दो कुच बिन्दु को प्रणाम है
सपरार्धा कला योनिमय है हे त्रिपुरे
इस तरह जो कामकला है उसे सदा प्रणाम है
सर्वसंपत्प्रदा को नमस्कार कर हे त्रिपुरेश्वरि

गंध अक्षतादि अर्पण करता हूँ हे महेश्वरि
वाग्भवादि को नमस्कार कर मंडल स्थापक रचता हूँ
जलयुक्त से देख मकारत्रय के माध्यम से
मात्रिकाओं के लिये उत्तमवलि का विन्यास चढ़ाता हूँ

नमस्ते देव देवेशि नमस्त्रैलोक्य वंदिते
नमः परशिवाङ्कस्थे नमस्त्रिपुर सुन्दरि
प्रदक्षिणा कर नमस्कार है, फिर मंत्रों का स्मरण
तुम्हारी प्रीति हित महाविद्या का जप करता हूँ

महादेवि महेशानि महाशिवे महाप्रिये
महानित्ये महासिद्धे तेरी शरण लेता हूँ
हे ललिते जगदीश्वरी तेरा जप करता हूँ
सदाशिव प्रियंकरी महिमा करुणानिधे

जगन्मातर्जगद्रूपे जगदीश्वर-वल्लभे
जगन्मये जगत्पूज्ये गौरी तेरे आश्रय में हूँ
अनाद्ये सर्वलोकों में प्रथम हे भक्तेष्टदायिनी
गौरी राजन्य तनये नमस्ते त्रिपुरसुन्दरी

ब्रह्ममाता महेश्वरी का जप करता हूँ
ब्रह्मादिसुर स्तुति करते हैं तीनों लोक वश करते हैं
सर्वसंपत्प्रदे नित्य तुम्हारी कल्पना करता हूँ
नित्यानन्दे निराधारे चिद्रूपिणि शिवप्रिये

अणिमादि गुणाधारे तेरी सदा कल्पना करता हूँ
ब्रह्मादिमातृसंस्तुत्ये सर्वावरणमयी है तू
ज्योतिर्मय महारूपे महिमा है त्रिपुरे सदा
लक्ष्मी वाणी आदि पूज्या हैं ब्रह्मविष्णुशिवस्तुते

तेरे चरण कमल को भजता जो सब फल देती हैं
सर्वशक्तियाँ हैं उनमें सर्वाभीष्ट फलप्रद हैं
नमस्कार तव चरणकमल को हे देवी त्रिपुरसुन्दरी
तेरी प्रीति के हित कांचीशक्ति तेरा पूजन करता हूँ

मपंचक से हे शक्ति तुम्हारा तर्पण करता हूँ
फिर हवन शेष चिदग्नि में आहुति देता हूँ
तेरी प्रीति हित महादेवि, मेरे अभीष्ट को सिद्ध कर
फिर खेचरीमुद्रा से तेरा उद्वासन करता हूँ
क्षमा करें हे माँ

मेरे हृदय में सदा वास करें हे त्रिपुरे परमेश्वरी
जगदम्ब महाराज्ञि महाशक्ति शिवप्रिये
हृदचक्र में सतत बैठें हे महात्रिपुरसुन्दरी
सर्वलोकैक संपूज्ये सकलावरण संयुते।

यहीं तक त्रिपुरसुन्दरी हृदय है—सभी कामनायें पूर्ण
यह महारहस्य है देवताओं को भी दुर्लभ है, साक्षात
सदाशिव ने कहा है, अतिगुह्यों में उत्तम है।
जो नित्य एकाग्रमन से पढ़ें या सुनें दत्तचित्त से

देवी की नित्य पूजा का फल मिल जाय, न संशय है।
सर्वपापों से मुक्त बने कायवाक्चित् तुरंत सुधरे
सभी जन्मों के जमे हुए ज्ञान-अज्ञान विशुद्ध हों,
सभी शुभकर्मों के जो फल हैं सभी तीर्थों के जो फल हैं,

उनके पुण्य नित्य उन्हें लाभ देते रहेंगे।
अचला लक्ष्मी मिलेगी जो त्रिलोकी में दुर्लभ है।
साक्षात् विष्णुरूप बनकर लक्ष्मी सेवन कर लेंगे।
सभी ऐश्वर्य मिलेंगे बन जायेंगे उत्तम शीघ्र।

अष्टसिद्धियाँ साथ रहेंगी, शीघ्र होगा कल्याण उन्हें,
शंखादिनिधि प्राप्त करेंगे, जो नित्य उपासना करेंगे।
अष्टकर्मवश में रहेंगे शीघ्रसिद्धजन बन जायेंगे,
भूलोक की सभी नारियाँ, पातालों की देवियाँ,

सभी लोकों में जितने हैं सभी रूप में प्राप्त रहेंगे,
रमण करेंगी सभी वशी हो इसमें संशय तनिक नहीं।
राजा भी सब वश में होंगे हरिहर देव उन्हीं के पास,
अनंत आदि जो महानाग हैं सिद्धयोगी जन जितने हैं

ऋषि मुनि यक्ष सदा रहेंगे पास उन्हीं के।
शिव विष्णु के ऐसी कीर्ति सदा फैलेगी।
परम सिद्ध बन वे साधक, गगनविहारी बन पायेंगे,
अपमृत्यु से मुक्त रहेंगे कालमृत्यु से वर्जित भी

परमपुण्य के भागी होंगे हरिहर को भी दुर्लभ जो ।
बिना सुने भी शास्त्रों के, सब ज्ञान उन्हें मिल जायेंगे ।
मूर्ख भले हों दक्षिण मूर्त्तिवत् ज्ञानी बन जायेंगे ।
ग्रह भूत पिशाच हैं जितने यक्ष राक्षस गन्धर्व हैं,

इन पदों का स्मरण करते ही सदा विनष्ट हो जायेंगे ।
इसके जप से सभी विषों का नाश सुनिश्चित है,
सुन्दरता मिल जायगी हजारों कामदेव की,
इसीसे परम शुभ है यह त्रिपुराहृदयस्तोत्र,

सदा जपते रहने से शिवरूप बन जाते हैं।
ऐसे ही त्रिपुरसुन्दरी के जप से पूजा फल मिलते,
महाऐश्वर्य मिल जाते हैं सभी विद्यायें आती हैं,
उसके स्पर्श वायु से मुर्दे में जीवन आता है,

सभी विघ्न विध्वंसकर उत्तम मानव बन जाते हैं।
सभी कामनाओं का भोग रोज प्राप्त होता रहता है,
पुत्रपौत्र औ' महालक्ष्मी से घर भर जाता है।
साक्षात् सदाशिव बन जाते हैं परम पुण्य से युक्त हो,

सृष्टि पालनसंहार कार्य उनके हाथों में आता है।
सदा वहाँ बैठा रहता है चिन्तामणि भी

उसके घर में कामधेनु और कल्पतरू बसते हैं।
महाविजय मिलता है नर को वज्रकाय होता है,
महाकामदेव का साकार रूप धर लेता है।
महासुखी ऐसा होता है जैसे भगवान् ही बन जाय,
सभी बंधनों शृङ्खलाओं से मुक्त बन जाता है,
सभी रुद्रहरि के पूजन से सतत रहता मग्न है,

सभी सुखों का बास वहाँ सब दुखों से मुक्ति वहाँ,
जो दुर्लभ है देव गंधर्व यक्षों और ब्रह्मा को
अतिशीघ्र ही मिलता है, सब कामना पूर्ण बन
दिव्याभोग से मुक्त हो दिव्य कन्या के साथ में,

दिव्याभरण विभूषित हो चढ़ विमान उड़ता रहता है
लिप्त रहे दिव्य चंदन से बीसों वर्ष शताधिक है,
भोग रहे सब लोकों को देव लोकों के बासी वने,
इसी तरह त्रिपुराहृदय के स्तोत्रों का गुण गाते हैं।
सदा जयें और बनें सदाशिव जय जय जय जय ॥

इति श्री वामकेश्वरतन्त्र के त्रिपुरसुन्दरीहृदय सम्पूर्ण है।

□

प्रकाशक :
सियारामशरण
पुस्तकभंडार *पब्लिशर्स*
पुस्तकभंडार कंपाउंड
गोविन्द मित्र रोड
पटना - ८०० ००४
प्रकाशन तिथि : पौष पूर्णिमा २०५८ वि. सं.